International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 41-42

शोषण का दस्तावेज "बकरी"

डॉ. नीना शर्मा
का.आचार्या, हिन्दी विभाग, आणंद आर्ट्स कोलेज, आणंद, गुजरात, भारत

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कवि, नाट्यकार कहानीकार उपन्यासकार एवं सफल संपादक सर्वेश्वरदयाल सक्सेना | दुःखो के बिच अपने आपको संयत रखने वाले सर्वेश्वरने जीवन यात्रा में कई उतार चढाव देखे है | माँ का अभाव पत्नि की मृत्यु के बाद भी दुःखो का सैलाब कम नहीं हुआ | पत्नि की मृत्यु के बाद अकेले रहना पसंद किया और अपने बच्चो को माँ और पिता दोनो का प्यार दिया | लेकिन कभी भी अपने अंदरऔर की वेदना को अपने व्यवहार में आने नहीं दिया | "सर्वेश्वर आजीवन गरीबी से लड़ते रहे और गरीबों का साथ दिया पढाई के दिनों में भी जब कि अपनी जीविका जुटानी मुश्किल थी, फिर भी वे दूसरो की फ़ीस, किताबे और खाने के लिए अपनी पूंजी दे देते" |१ कवि हृदय होने के कारण हमेशा संवेदनाओ से भरे रहते थे |

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने सफल नाट्यकार के रूप में आते है | जिस दौर में लोकनाट्य परंपरा को आधुनिक नाटक के साथ जोड़कर देखा जा रहा था | उस समय सक्सेना जी ने अपनी नाट्य कृति "बकरी" की रचना की यह मूलतः राजनीतिक व्यंग्य का नाटक है | "बकरी समकालीन जिंदगी का एक प्रामाणिक दस्तावेज है |"२

नाटक का आरंभ नट नटी के संवाद से होता है और नाटक में वंदना से ही वह भ्रष्ट राजनीति के दलदल को दिखा देता है जिसमे छटपटाता आम आदमी दिखाई देता है |

> नट "पांच देव सम पांच दल, लगी ढोंग की रेस
> जिनके कारण हो गया देश आज परदेश"३

राजनीति का ऐसा कुरूप और ढोंगी चेहरा सक्सेना जी ने बताया है की पाठक तिल मिलाकर रह जाता है | दुर्जनसिंह, कर्मवीर और सत्यवीर, गाँव की भोली भाली जनता को लुटने की योजना बनाते है | गाँव की गरीब भोली विपती की "बकरी" को गांधीजी की बकरी बताकर जनता को धर्म की आड़ में लुटते है | सत्ता और भ्रष्टाचार का खुला नाच होता है और भोली भाली जनता उनके बिछाए माया जाल में फंस कर रह जाती है |

> "दुर्जन .... इस बकरी ने हमेशा दिया है | आपको आजादी दी, एकता दी, प्रेम दिया, आज भी बहुत कुछ देने को मुंतजिर है | पर आप लेना भूल गए है | क्योंकि आप देना भूल गए है |"४

आजादी के बाद आजादी के नाम पर लोगो को लूंटा गया हम गुलामी से मुक्त अवश्य हुए लेकिन अब हमारी लड़ाई हमारे अपनों से थी जो एक दुसरे से अपने आपको श्रेष्ठ साबित करना चाहते थे | बकरी नाटक भी इसी ओर संकेत करता है | वह सत्ता के गलियारों में आम आदमी की सिसकियो को सुनता है जहाँ हाथ जोड़े फटे हाल चिथड़ी में लिपटा आम आदमी अपना सब कुछ न्योछावर करना चाहता है और भ्रष्टाचारी उसे लुटते हुए जरा भी संकोच अनुभव नहीं करते है वह जनता को बकरी बनाकर उसका दोहन करना चाहते है | युवक आकर सभी को समझाता है लेकिन अज्ञान के अंधकार में डूबा मनुष्य उजाले की रोशनी को अपनी धार्मिकता पर प्रहार मानता है | युवक समझाता है कि आज की लूट इसका अंत नहीं प्रारंभ है | आज बकरी के नाम पर लूटा जा रहा है कल किसी ओर के नाम पर लूंटा जाएगा |

> "युवक – ठीक है | कल को आप लोगो को भी जेहल ले जाएँगे | आज बकरी गांधीजी की हुई कल को गाय कृष्ण जी की हो जाएगी बैल बलरामजी के हो जाएंगे ये सब ठग है ठग |"५

यह नाटक जब रंगमंच पर खेला गया तो इसका काफी विरोध हुआ लेकिन सर्वेश्वरदयाल सक्सेना ने सत्य को छिपाया नहीं उन्होंने स्वयं कहा कि – "ये तमाम घटनाएँ यह दिखाती है कि यह नाटक देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति से टकराने वाली और मुँह चुराने वाली ताकतों का और अधिक ध्रुवीकरण करता है | गांधीवाद का मुखौटा लगाकर आज भी सत्ता की राजनीति की जा रही है ओर देश की जनता को छला जा रहा है |"६

जिस गांधी के नाम पर नेता अपनी अपनी रोटिया सेकते है उस गांधी के सिध्धांतो को कभी अपने जीवन में उतारने की कोशिश ही नहीं की लेकिन उनके नाम पर पैसा सत्ता प्रसिद्धी सभी कुछ लूटते रहे है | युवक उस जनता का प्रतिनिधित्व करता है जो इस सत्य को उदघाटित करना चाहता है और अपनी समझ से वह गाँव वालो की आँखों पर पड़ी पट्टी उतारने में सफल भी होता है | यह नाटक वीरो और क्रांतिकारियों के नाम पर अपनी राजनीति चमकाने वालो पर व्यंग्य करता है | "आज गांधीजी और गांधीवाद के नाम पर हर एक का रोजगार-चमक रहा है | उसकी समाधि पर एक फूल चढ़ाकर सब अपनी फूलो की सेज सजाते रहे है |"७

यही कारण है कभी मार्क्सवाद के नाम पर कभी गांधीवाद के नाम पर ती कभी समाजता के नाम पर देश में लूंट मची है | और इस लूंट में शामिल हर वो शख्स है जो केवल अपने स्वार्थ की रोटिया सेकना चाहता है | "कर्मवीर....यह धरती एक चारागाह है जिसकी घास जितना ही रौंदो उतना ही पनपती है हमे यकीन है कि हम आप सब मिलकर इस हरियाली को खत्म नहीं होने देंगे | अपने अपने चौपाये खुले छोड़ दीजिए, चरे मस्त रहें |.....चौपाया अपने जबड़े से एक घास नहीं कुतरता दांत होते है इसीलिए है कि काटते चबाते समय गिना ना जाए |"८

यह नाटक आम आदमी की व्यथा की कथा भी है | जिसे लेखक ने उनकी चुप्पी से बांधा है | बकरी शांति प्रतिष्ठान, बकरी संस्थान, बकरी सेवासंघ, बकरी मंडल आदि संस्थाएँ बनाकर जनता को लुटने का प्रावधान है लेखक ने आज की

राजनीति की ओर यही संकेत किया है | बकरी की हत्या राजनीति में उन सिध्धांतो की हत्या है जिनके आधार पर आजादी मिली थी |

जिस धूल से शहरो में मची रंगरेलियां
जिन छप्परो के बल पे खड़ी हैं हवेलिया
उस आदमी को आदमी वो मानते नहीं
जब काम निकल जाता है पहचानते नहीं
उसकी बिवाईयों से चला रेलगाड़ियां
उसके ही चिथड़ो से पहन सूट साड़ियां
उसके ही पेट पर जला के जश्न का चिराग,
कहते समाजवाद है 'ओ देश जाग जाग |'९

लेखक ने इस नाटक को उत्तरप्रदेश की लोकनाट्य शैली 'नौटंकी' में यह इसकी रचना की है | १९६० के बाद के नाटको में यह परंपरा विद्यमान रही जहाँ आधुनिक नाट्यकारो ने लोकनाट्य शैलियों में नाटको की रचना की और इस नाटक में लोकनाट्य शैली के नौटंकी रूप का प्रभाव मिलता है | जहाँ उसके परंपरागत छंदों ओर शिल्प का प्रयोग देखने को मिलता है | जिसमे दोहा चौबोला बहरेतबील, कहरवा आदि छंदों का प्रयोग है साथ ही नट नटी के द्वारा इसका प्रारंभ किया गया है | कविता नागपाल का मानना है कि "बकरी का शिल्प लोचपूर्ण है | इसे नौटंकी और पारसी थियेटर के शैलीगत प्रवाह में बांधा गया है | लेकिन जहां नौटंकी में साहसिक घटनाओ, पौराणिक और ऐतिहासिक प्रसंगों के अतिरंजित रूप आम जनता को संवेदित करते है, वहीँ 'बकरी' का विशेष कथ्य उसे पारंपरिक नौटंकी शैली से थोडा-सा हटाता हुआ एक तीखा सामाजिक व्यंग्य को और तीखा बनाने के लिए नाट्यकार ने पारसी रंगमंच और पुरानी नौटंकी की लोकप्रिय धुनों का उप्योह किया है, जिसके लिए भाषा की आम मुहावरेदारी और लयात्मकता बुनियाद का काम करती है |"१०

रंगमंच की दृष्टि से यह नाटक मुक्तकाशी रंगमंच की परंपरा का निर्वाद करता है | 'बकरी' नाटक जब भी बड़े बड़े महानगरों में खेला गया वहां के लोक शिल्प को भी इसने ग्रहण किया है | "बकरी" की भूमिका में लेखक ने स्पष्ट किया है कि "इतना ही नहीं जहाँ यह नाटक हिन्दी की बोलियों की ओर बढ़ा है यानी ब्रजभाषा, छतीसगढ़ और कुमायूनी में खेला गया है वहाँ यह देश की प्रादेशिक भाषाओ में भी खेला जा रहा है |११

कहने का आशय यह कि इस नाटक को बिना लोकशैली शिल्प के खेलना तर्कसंगत नहीं जान पड़ता और उसका अपना कोई औचित्य भी नहीं है | यह नाटक गाँव की प्रमुख समस्या पर लिखा गया है जहाँ राजनैतिक स्वार्थ से ग्रसित ग्रामीणजन मजबूर एवं बेबस जान पड़ते है | इन्हीं ग्रामीणजनों में जागृति की भावना से यह नाटक लिखा गया है | लेखकने स्वयं स्वीकार किया है कि "यह नाटक जितना ही गांवो, कस्बों, मजदूर बस्तियों, स्कूल, कोलेजो में खेला जायेगा उतना ही इसका उदेश्य पूरा होगा |"१२

यह नाटक पात्र-संयोजन एवं साजसज्जा के दृष्टिकोण से सादगी के साथ–साथ कलात्मकता का वाहक है | गेय पक्ष में नाटक अधिकतर गद्य भाषा में होते हुए भी नौटंकी के छंदों एवं लोकधुनों में एवं लोकगीतों में ढाला हुआ है | भाषा की दृष्टि से नाटक को अधिक रूप में लोकजीवन से जोड़ने की भरपूर कोशिश की गई है | यह नाटक न केवल महानगरीय सभ्यता में ही अपनाया गया है, बल्कि देहाती क्षेत्रो और सुदूरवर्ती अंचलों में भी वहाँ की लोकधुनो, लोकशैलियों, लोकनृत्यों एवं लोकवाद्यो के साथ खेला गया है और वह लोकप्रिय भी रहा है |

यह नाटक शहर ही नहीं, वरन गाँव दोनों ही जगह के आम आदमी की तकलीफ की आवाज है | श्री नरनारायण राय का मत है कि – "इस नाटक के नाट्यसंरचना-शिल्प में लोक-नाट्य की शैली अपनायी गयी है, लेकिन यह उधर ली हुई नहीं है – हमारी अपनी जमीन की उपज है | पारंपरिक नौटंकी की शैली में लिखा गया यह नाटक अपने सहज दृश्यबंध और मंच शिल्प के कारण गाँव और शहर हर जगह के आम आदमी के लिए एक सहज सुलभ नाट्य प्रस्तुती होगी |"१३ अतः यह नाटक लोकनाट्य की नौटंकी शैली से प्रभावित होते हुए भी अपने उद्देश्य को अधिक तीखा एवं व्यंग्यपूर्ण बनाता है |

संदर्भ

1. सर्वेश्वर व्यक्तिक और रचनाकार – डॉ.अखिलेश गोस्वामी पेज.नं-१४
2. नया नाटक उदभव और विकास – डॉ.नरनारायण राय – पेज नं.-११०
3. 'बकरी' सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – पेज नं.-१५
4. वही – पेज.नं-२९
5. वही - पेज.नं-३९
6. वही – भूमिका पेज.नं-७
7. सर्वेश्वर व्यक्तिक और रचनाकार – डॉ.अखिलेश गोस्वामी पेज.नं-२०८
8. 'बकरी' सर्वेश्वरदयाल सक्सेना – पेज नं.-६९
9. वही-पेज.नं.-६६
10. वही-(कविता नागपाल) निर्देशक की बात- पेज.नं-१०
11. वही- भूमिका – पेज.नं.-६
12. वही- पेज.नं.-५
13. आधुनिक हिन्दी नाटक एक यात्रा दर्शक-नरनारायण राय –पेज.नं.-१७४